Holy Drops
Be with God

शनि चालीसा

जय गणेश गरिजिा सुवन, मंगल करण कृपाल ।
दीनन के दुःख दूर करि, कीजै नाथ नहिाल ॥
जय जय श्री शनदिेव प्रभु , सुनहु वनिय महाराज ।
करहु कृपा हे रवतिनय , राखहु जन की लाज॥

जयतजियत शिनदिेव दयाला । करत सदा भक्तन प्रतपिाला ॥
चारभिुजा, तनु श्याम वरिाजै । माथे रतन मुकुट छवछिाजै ॥
परम वशिाल मनोहर भाला । टेढ़ी दृष्टभिृकुटवकिराला ॥
कुण्डल श्रवन चमाचम चमके । हयि माल मुक्तन मणदिमकै ॥
कर में गदा त्रशिूल कुठारा । पल बचि करैं अरहिंसिंहारा ॥
पगिंल, कृष्णो, छाया, नन्दन । यम, कोणस्थ, रौद्र, दुःख भंजन ॥
सौरी, मन्द शनी दश नामा । भानु पुत्र पूजहंसिब कामा ॥
जापर प्रभु प्रसन्न हवैं जाहीं । रंकहुं राव करैं क्षण माहीं ॥
पर्वतहू तृण होइ नहिारत । तृणहू को पर्वत करडिारत ॥
राज मलित वन रामहंदिीन्हयो । कैकेइहुँ की मतहिरलिीन्हयो ॥
वनहुं में मृग कपट दखिाई । मातु जानकी गई चुराई ॥
लषणहंशिक्तवकिल करडिारा । मचगिा दल में हाहाकारा ॥
रावण की गत-मितबौराई । रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई ॥
दयिो कीट करकिंचन लंका । बजबिजरंग बीर की डंका ॥
नृप वक्रिम पर तुहपिगु धारा । चत्रि मयूर नगिलगिै हारा ॥
हार नौलखा लाग्यो चोरी । हाथ पैर डरवायो तोरी ॥
भारी दशा नकिृष्ट दखिायो । तेलहंघिर कोल्हू चलवायो ॥
वनिय राग दीपक महँ कीन्हयों । तब प्रसन्न प्रभु हवै सुख दीन्हयों ॥
हरशि्चन्द्र नृप नारबिकिानी । आपहुं भरे डोम घर पानी ॥
तैसे नल पर दशा सरिानी । भूंजी-मीन कूद गई पानी ॥
श्री शंकरहंगिह्यो जब जाई । पारवती को सती कराई ॥
तनकि वकिलोकत ही कररीसा । नभ उड़गितो गौरसिुत सीसा ॥
पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी । बची द्रोपदी होतउिधारी ॥
कौरव के भी गतमितमिारयो । युद्ध महाभारत करडिारयो ॥
रवकिहँ मुख महँ धरतित्काला । लेकर कूदपिरयो पाताला ॥
शेष देव-लखवनिती लाई । रवकिो मुख ते दयिो छुड़ाई ॥
वाहन प्रभु के सात सुजाना । जग दगि्गज गर्दभ मृग स्वाना ॥
जम्बुक सहि आदनिख धारी । सो फल ज्योतषि कहत पुकारी ॥
गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं । हय ते सुख सम्पत्तउिपजावै ॥
गर्दभ हानकिरै बहु काजा । सहि सद्धिकर राज समाजा ॥
जम्बुक बुद्धनिष्ट कर डारै । मृग दे कष्ट प्राण संहारै ॥
जब आवहंस्वान सवारी । चोरी आदहिोय डर भारी ॥
तैसहचिारचिरण यह नामा । स्वर्ण लौह चाँदी अरु तामा ॥
लौह चरण पर जब प्रभु आवैं । धन जन सम्पत्तनिष्ट करावैं ॥
समता ताम्र रजत शुभकारी । स्वर्ण सर्वसुख मंगल भारी ॥
जो यह शनचिरत्रि नति गावै । कबहुं न दशा नकिृष्ट सतावै ॥
अद्भुत नाथ दखिावैं लीला । करैं शत्रु के नशबिलढिीला ॥
जो पण्डति सुयोग्य बुलवाई । वधिवित शनग्रिह शांतकिराई ॥
पीपल जल शनदिविस चढ़ावत । दीप दान दै बहु सुख पावत ॥
कहत राम सुन्दर पर ... सुख होत प्रकाशा ॥

Be with God
Holy Drops

पाठ शनशि्चर देव को, की हों वमिल तैयार ।
करत पाठ चालीस दनि, हो भवसागर पार ॥